Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2024: 8.058,
https://www.srjis.com/issues_data/244
PEER REVIEWED, REFEREED & INDEXED JOURNAL, DEC-JAN 2025, VOL-13/67

भारतीय शिक्षा व संस्कृति एवं पंडित दीन दयाल उपाध्याय के विचार

डॉ0 सत्येन्द्र सिह

शोध निर्देशक, (असिस्टेंट प्रोफेसर) शिक्षाशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय मॉट, मथुरा

रेनू

शोधार्थिनी, पी–एच0डी0 (छात्रा), डॉ0 बी0आर0 आम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

Paper Received On: 21 December 2024

Peer Reviewed On: 25 January 2025

Published On: 01 February 2025

Abstract

भारतीय शिक्षा और संस्कृति एक समृद्ध परम्परा का प्रतिनिधित्व करतीं है, जो नैतिकता, आध्यात्मिकता और समग्र विकास पर आधारित है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय, जो भारतीय विचारधारा के प्रमुख चिंतक और एकात्म मानववाद' के प्रणेता थे, ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को स्वदेशी दृष्टिकोण के साथ पुनर्गठित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उनका मानना था कि शिक्षा केवल बौद्धिक विकास का साधन नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समग्र उत्थान का माध्यम है।

उनके विचारों के केन्द्र में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को प्राथमिकता देना, मातृभाषा में शिक्षा को बढ़ावा देना, स्वावलंबन और व्यावसायिक कौशल का विकास और राष्ट्रीयता की भावना को प्रबल करना शामिल है। यह शोध पंडित दीन दयाल उपाध्याय के विचारों का विश्लेषण करते हुए भारतीय शिक्षा और संस्कृति में उनके योगदान की व्याख्या करता है। साथ ही यह अध्ययन वर्तमान शिक्षा प्रणाली में 'एकात्म मानववाद' के सिद्धान्तों की पड़ताल करता है, विशेश रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में। यह शोध भारतीय शिक्षा को उसकी जड़ों से जोड़ते हुए, आधुनिक चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करने की दिशा में उनके विचारों की उपयोगिता पर प्रकाश डालता है।

Keyword*: भारतीय शिक्षा, संस्कृति, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, एकात्म मानववाद, स्वदेशी शिक्षा, नैतिक शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।*

प्रस्तावनाः–

भारतीय संस्कृति और शिक्षा प्रणाली अपने भीतर हजारों वर्षों की सभ्यता, ज्ञान और परम्पराओं को समेटे हुए है। यह प्रणाली न केवल व्यक्ति के बौद्धिक विकास को बढ़ावा देती है, बल्कि उसके नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान का भी माध्यम है। पंडित दीनदयााल उपाध्याय भारतीय जनसंघ के एक प्रमुख विचारक और एकात्म मानववाद के प्रणेता ने भारतीय शिक्षा और संस्कृति के पुनर्निर्माण के लिए स्वदेशी और सांसकृतिक दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया। उनका मानना था कि शिक्षा केवल व्यक्ति की आर्थिक जरूरतों को पूरा करने का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज और राष्ट्र के व्यापक विकास का आधार भी है।

Copyright@2025 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

भारतीय शिक्षा और संस्कृति का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यः–

भारत में शिक्षा का प्राचीन स्वरूप समाज और संस्कृति से गहराई से जुड़ा हुआ था। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को जीवन के हर क्षेत्र में सक्षम बनाना था।

1. गुरूकुल प्रणाली

- वैदिक युग में शिक्षा गुरूकुलों में दी जाती थी, जहां शिष्य गुरू के सानिध्य में शिक्षा प्राप्त करते थे।
- यह प्रणाली केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं थी, बल्कि चरित्र निर्माण, आत्म–संयम और समाज सेवा पर भी जोर देती थी।

2. तक्षशिला और नालंदा

- ये विश्वप्रसिद्ध शिक्षण संथान थे, जहां देश–विदेश से विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते थे।
- इन संस्थानों में विज्ञान, गणित, दर्शन, चिकित्सा और अन्य विषयों की पढ़ाई होती थी।

3. मध्यकालीन और औपनिवेशिक प्रभाव

- मध्यकालीन भारत में शिक्षा पर विदेशी आक्रमणों का प्रभाव पड़ा, जिससे शिक्षा प्रणाली कमजोर हुई।
- औपनिवेशिक काल में, ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली ने भारतीय परंपरागत ज्ञान को उपेक्षित कर दिया और अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी मूल्यों को प्राथमिकता दी।

पंडित दीन दयाल उपाध्याय का जीवन परिचय और शिक्षा के प्रति दृष्टिकोणः

प्रारम्भिक जीवन और शिक्षा

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर 1916 को उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के नगला चंद्रभान ग्राम में हुआ था। उनके पिता भगवती प्रसाद उपाध्याय रेलवे में कर्मचारी थे और उनकी माता रामप्यारी देवी एक धार्मिक महिला थीं। दीन दयाल जी का जीवन बचपन से ही काफी संघर्षों में व्यतीत हुआ। जब उनकी उम्र मात्र 3 वर्ष की थी तभी उनके पिता जी का देहांत हो गया और मात्र 7 वर्ष की आयु में उनकी मां भी उन्हें छोड़कर चल बसीं। इसके उपरान्त उनका पालन–पोषण उनके चाचा ने किया।

दीनदयाल जी की प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान के सीकर में हुई। दीनदयाल जी बचपन से मेधावी छात्र थे और 10 वीं कक्षा में मेरिट सूची में स्थान प्राप्त किया। आगे की पढ़ाई के लिए उन्होंने पिलानी और कानपुर में अध्ययन किया। दीनदयाल जी ने हिन्दी साहित्य और शिक्षा में स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

सामाजिक और राजनीतिक जीवन

पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शामिल होकर समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण के कार्यों में हिस्सा लिया। 1937 में आरएसएस के सम्पर्क में आकर उन्होंने अपने जीवन को राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। उन् 1940 में भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई और दीन

दयाल उपाध्याय इसके मुख्य विचारक और संगठनकर्ता बने। उन्होंने जनसंघ को मजबूत और सुदृढ़ बनाने में अपना अतुल्यनीय योगदान दिया।

विचारधारा और योगदानः

- **एकात्म मानववादः–**

दीन दयाल उपाध्याय की सबसे प्रमुख विचारधारा एकात्म मानववाद' है, जिसे उन्होंने 1965 में प्रस्तुत किया। यह विचार व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन पर आधारित है। इसके अनुसार, व्यक्ति का विकास समाज और राष्ट्र से अलग नहीं हो सकता है। यह उनका सिद्धान्त था, जिसमें व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करने पर बल दिया गया। उन्होंने कहा कि शिक्षा को इस प्रकार योजित किया जाना चाहिए कि यह व्यक्ति और समाज दोनों के हित में काम करे।

- **स्वदेशी और आत्मनिर्भरता पर बलः–**

उन्होंने भारतीयता, स्वदेशी विचारधारा और आत्मनिर्भरता पर जोर दिया। उनका मानना था कि भारत की प्रगति भारतीय संस्कृति और परम्पराओं को आधार बनाकर ही संभव है।

- **नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यः–**

पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने अपने विचारों और सिद्धान्तों को प्रसारित करने के लिए कई पुस्तकें और लेख लिखे। इनमें कुछ प्रमुख है–

- सम्राट चन्द्र गुप्त
- जगद्गुरू शंकराचार्य
- एकात्म मानववाद

- **राष्ट्र जीवन की दिशाः–**

पंडित दीन दयाल उपाध्याय की 11 फरवरी 1968 को संदिग्ध परिस्थितियों में मृत्यु हो गई। उनका शव मुगलसराय रेलवे स्टेशन (दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन) के पास पाया गया। उनकी असामयिक मृत्यु ने पूरे देश को झकजोर दिया।

<u>पंडित दीन दयाल उपाध्याय के शिक्षा सम्बन्धी विचारः</u>–

पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने शिक्षा को केवल बौद्धिक विकस तक सीमित रखने के बजाय इसे व्यापक दृष्टिकोण से देखने का आह्वान किया।

1. **<u>मूल्यों पर आधारित शिक्षाः</u>–**

- उन्होंने नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा पर जोर दिया ताकि विद्यार्थियों में समाज सेवा और आत्मनिर्भरता की भावना विकसित हो।

2. **<u>स्वदेशी शिक्षा प्रणालीः</u>–**

- उपाध्याय जी का मानना था कि भारतीय शिक्षा प्रणाली को पश्चिमी प्रभाव से मुक्त कर स्वदेशी आवश्यकताओं के अनुरूप बनाना चाहिए।

3. **भारतीयता का संरक्षण**:–

- दीनदयाल जी का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य भारतीय संस्कृति और परंपराओं को सहेजना और उन्हें मजबूत करना होना चाहिए।
- उनका विचार था कि भारतीय शिक्षा प्रणाली को भारतीय जीवनमूल्यों के आधार पर विकसित किया जाए।

4. **मातृभाषा में शिक्षा**:–

- उन्होंने प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में देने पर जोर दिया। उनका मानना था कि मातृभाषा में शिक्षा देने से बच्चों का मानसिक और सांस्कृतिक विकास होता है।

5. **व्यावसायिक और व्यावहारिक शिक्षा**:–

- उन्होंने शिक्षा को व्यावसायिक रूप से उपयोगी बनाने की बात की जिससे छात्र स्वावलंबी बने।

6. **राष्ट्रीयता का विकास**:–

- शिक्षा के माध्यम से छात्रों में देशभक्ति और भारतीयता का भाव जागृत करने की आवश्यकता पर उन्होंने बल दिया।

भारतीय संस्कृति में शिक्षा का स्थान:–

भारतीय संस्कृति में शिक्षा को केवल रोजगार के साधन के रूप में नहीं, बल्कि समाज सुधार और आत्मोत्थान के माध्यम के रूप में देखा गया है।

1. **धार्मिक और नैतिक मूल्यों का महत्व**:–

- भारतीय शिक्षा प्रणाली ने वेद, उपनिषद, गीता जैसे ग्रन्थो के माध्यम से नैतिक मूल्यों को बढ़ावा दिया।
- पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने इसी परंपरा का पुनर्जीवित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

2. **आध्यात्मिक जागरूकता**:–

- शिक्षा का उद्देश्य आत्मज्ञान प्राप्त करना और समाज को नैतिक और सांस्कृतिक रूप से सुदृढ़ करना है।

3. **संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन**:–

- शिक्षा भारतीय कला, संगीत और साहित्य को संरक्षित का माध्यम होना चाहिए।

वर्तमान समय में पंडित दीन दयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकताः–

आज के युग में जब भारतीय शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन हो रहा है, पंडित दीन दयाल उपाध्याय के विचार अत्यधिक प्रासंगिक हो गए है।

1. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020**:–

- इस नीति में मातृभाषा में शिक्षा, नैतिक मूल्यों पर बल और स्वदेशी शिक्षा के महत्व को प्रमुखता दी गई है, जो पंडित दीन दयाल उपाध्याय के विचारों से प्रेरित लगता है।

2. **स्वावलंबन और कौशल विकासः–**

- नई शिक्षा प्रणाली कौशल आधारित और व्यावहारिक शिक्षा को बढ़ावा देती है, जो उनके विचारों के अनुरूप है।

3. **सांस्कृतिक जागरूकता**:–

- भारतीय संस्कृति को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना उनकी दृष्टि का प्रमुख हिस्सा था, जिसे वर्तमान में फिर से अपनाया जा रहा है।

नई शिक्षा नीति 2020 में पंडित दीन दयाल उपाध्याय के विचारों का समावेशः–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारत–केन्द्रित शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना की गई है, जो इसकी परंपरा, संस्कृति, मूल्यों और लोकाचार में परिवर्तन लाने में अपना बहुमूल्य योगदान देने को तत्पर है। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य बिना किसी भेद भाव के प्रत्येक व्यक्ति को बढ़ने और विकसित होने के लिए एक सामान अवसर प्रदान करना है तथा विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल, बुद्धि और आत्मविश्वास का सृजन कर उनके दृष्टिकोणों का विकास करना है। इस शोधपत्र में शोधकर्ता द्वितीयक आंकड़ों के माध्यम से जो गुणात्मक स्तरों पर आधारित है नई शिक्षा नीति की वास्तविक मूक विशेषताओं को दर्शाना चाहता है। उपर्युक्त विश्लेषित तथ्यों के आधार पर शोधकर्ता, इस शोधपत्र के माध्यम से अनेक सुझावों को प्रस्तुत करता है, जो भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए अति आवश्यक है। इसमें पंडित दीन दयाल उपाध्याय के 'एकात्म मानववाद' और उनके स्वदेशी दृष्टिकोण की स्वच्छ छवि दिखाई देती है। उनके विचारों का समावेश नई शिक्षा नीति में निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है–

1. मातृभाषा में शिक्षा का प्रावधानः–

पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा को प्राथमिकता देने पर बल दिया। नई शिक्षा नीति में इस विचार को अपनाते हुए कक्षा 5 (और जहां संभव हो, कक्षा 8 तक) तक बच्चों को मातृभाषा, क्षेत्रीय भाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा देने की बात कही गई है।

- यह बच्चों की समझ, रचनात्मकता और सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करने में सहायक होगा।
- मातृभाषा में शिक्षा छात्रों को उनके सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश से जोड़ने में मदद करती है।

2. <u>मूल्य आधारित शिक्षा</u>:–

- दीन दयाल उपाध्याय ने शिक्षा को नैतिकता और आध्यात्मिकता से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया था। नई शिक्षा नीति में नैतिक और सामाजिक मूल्यों के विकास पर जोर दिया गया है।
- छात्रों को नैतिकता, करूणा, ईमानदारी और जिम्मेदारी जैसे मूल्यों का शिक्षण दिया जाएगा।
- भारतीय संस्कृति, परम्परा और नैतिकता को शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

3. <u>स्वदेशी शिक्षा और भारतीयता का संरक्षण</u>:–

दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को स्वदेशी दृष्टिकोण के साथ विकसित करने की बात कही थी। नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय संस्कृति, परम्पराओं और लोक ज्ञान को संरक्षित और बढ़ावा देने का कार्य करती है।

- पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान प्रणाली जैसे योग, वेद, पुराण और आयुर्वेद को शामिल किया गया है।
- छात्रों को भारतीय कला, साहित्य और संगीत के महत्व को समझने और सीखने के अवसर प्रदान किए जाएंगे।

4. <u>समग्र विकास पर जोर</u>:–

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का 'एकात्म मानववाद' व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास पर जोर देता है। नई शिक्षा नीति समग्र शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करती है।

- शिक्षा को केवल रोजगार उन्मुख न बनाकर, समग्र विकास का माध्यम बनाने पर जोर दिया गया है।
- पाठ्यक्रम को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि यह छात्रों की रचनात्मकता, समस्या समाधान क्षमता और निर्णय लेने योग्यता को विकसित करे।

5. <u>कौशल विकास और स्वालंबन</u>:–

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने शिक्षा को स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता का माध्यम माना। नई शिक्षा नीति कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देती है।

- कक्षा 6 से ही छात्रों को व्यावसायिक कौशल का प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- नीति में रोजगार के लिए आवश्यक आधुनिक कौशल, जैसे– कोडिंग, डेटा एनालिटिक्स और डिजाइन थिंकिग पर जोर दिया गया है।

- 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान के तहत छात्रों को स्वरोजगार और उद्यमिता के लिए तैयार किया जाए।

6. <u>भारतीय भाषाओं और साहित्य का संवर्धन</u>:–

दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय भाषाओं और साहित्य को संरक्षण देने की बात कही थी। नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं के संवर्धन पर विशेष ध्यान दिया गया है।

- भारतीय भाषाओं में साहित्य और शोध को बढ़ावा दिया जाएगा।
- ''भारतीय भाषा संस्थान'' की स्थापना की जाएगी, जो भारतीय भाषाओं के विकास और प्रचार के लिए कार्य करेगा।

7. <u>समानता और समावेशिता</u>:–

दीनदयाल उपाध्याय ने शिक्षा को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाने की आवश्यकता पर बल दिया था। नई शिक्षा नीति 2020 में समाज के वंचित वर्गों के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं।

- वंचित वर्गों (जैसे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिला) के छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए विशेष प्रयास किए जाएंगे।
- 'जेंडर इन्क्लूजन फंड' और क्षेत्रीय संसाधन केन्द्रों की स्थापना की जाएगी।

8. <u>आधुनिकता और परंपरा का समन्वय</u>:–

दीनदयाल उपाध्याय ने आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ भारतीय परंपराओं के संतुलन पर जोर दिया। नई शिक्षा नीति 2020 भी इस दृष्टिकोण को अपनाने पर जोर देती है।

- विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार को शिक्षा प्रणाली का अभिन्न हिस्सा बनाया गया है।
- भारतीय संस्कृति और प्रौद्योगिकी का संतुलन स्थापित करने के लिए अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाएगा।

9. <u>बहुभाषीय शिक्षा प्रणाली</u>:–

दीनदयाल उपाध्याय ने शिक्षा का बहुभाषीय बनाने का समर्थन किया था। नई शिक्षा नीति भी बहुभाषीय शिक्षा को अपनाने पर बल देती है।

- छात्रों को एक साथ तीन भाषाओं को सीखने का अवसर प्रदान किया जाएगा।
- इसमें भारतीय भाषाओं को प्राथमिकता दी जाएगी।

नई शिक्षा नीति 2020 में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के 'एकात्म मानववाद' और उनके शिक्षा दर्शन के तत्व स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। यह नीति भारतीयता, समग्र विकास और स्ववलंबन पर आधारित है, जो पंडित दीन दयाल उपाध्याय के विचारों के साथ गहरे सामंजस्य में है।

यह नीति न केवल भारतीय शिक्षा प्रणाली को उसकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ती है बल्कि वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए उसे सक्षम बनाती है। इस प्रकार नई शिक्षा नीति भारतीय शिक्षा को स्वदेशी और समग्र दृष्टिकोण के साथ पुनः सशक्त करने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

निष्कर्षः–

पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने शिक्षा को भारतीय संस्कृति, मूल्यों और राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा। उनके विचार शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रखते, बल्कि इसे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समग्र विकास का माध्यम बनाते हैं। उनके दृष्टिकोण को आज की शिक्षा प्रणाली में शामिल करना भारतीय शिक्षा को वैश्विक मानकों पर ले जाने के साथ–साथ हमारी सांस्कृतिक जड़ों को भी मजबूत कर सकता है।

पंडित दीन दयाल उपाध्याय के विचार भारतीय शिक्षा और संस्कृति को एक स्वदेशी दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। उनका 'एकात्म मानववाद' सिद्धन्त शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास का माध्यम नहीं मानता बल्कि इसे नैतिकता, आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक मूल्यों के विकास का एक समग्र साधन मानता है। उनहोंने भारतीय शिक्षा प्रणाली को भारतीय संस्कृति, परम्पराओं और नैतिक मूल्यों से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया ।

औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय शिक्षा प्रणाली पश्चिमी प्रभाव में आ गई थी, जिससे हमारी सांस्कृतिक पहचान कमजोर हुई। पंडित दीन दयाल उपाध्याय का विचार था कि भारतीय शिक्षा को भारत की सांस्कृतिक जड़ों से जोड़कर एक समग्र और स्वावलंबी समाज का निर्माण किया जा सकता है। उन्होंने मातृभाषा में शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और शिक्षा में व्यावसायिक और कौशल विकास को बढ़ावा देने पर जोर दिया।

आज की शिक्षा प्रणाली में उनके विचारों की प्रासंगिकता राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यह नीति भारतीय संस्कृति और परंपराओं के साथ आधुनिकता का संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है। मूल्य–आधारित शिक्षा, मातृभाषा में शिक्षण, कौशल विकास और भारतीय भाषाओं के संवर्धन के प्रावधान उनके विचारों का प्रत्यक्ष रूप से समर्थन करती है।

इस शोध पत्र के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि पंडित दीन दयाल उपाध्याय के विचार केवल भारतीय शिक्षा के पुनर्गठन में ही सहायक नहीं है, बल्कि वे सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पुनर्जागरण के लिए भी महत्वपूर्ण दिशा प्रदान करते हैं। उनके विचार न केवल भारत की शिक्षा प्रणाली को उसकी जड़ों से जोड़ते हैं, बल्कि इसे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने की क्षमता भी प्रदान करते हैं।

अतः भारतीय शिक्षा प्रणाली में पंडित दीन दयाल उपाध्याय के विचारों को समाविष्ट करके न केवल भारतीय समाज का समग्र विकास संभव है, बल्कि एक सशक्त स्वावलंबी और नैतिक रूप से मजबूत राष्ट्र का निर्माण भी किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें एवं लेख

उपाध्याय, दीनदयाल– 'एकात्म मानववाद', भारतीय जनसंघ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1965।

शर्मा, रामनाथ– 'भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं दर्शन', किशोर भारती प्रकाशन, वाराणसी, 2005।

मिश्रा, रमेश– 'भारतीय संस्कृति और शिक्षा', साहित्य सदन, लखनऊ 2010।

त्रिपाठी, सत्येन्द्र– 'पंडित दीनदयाल उपाध्यायः जीवन और विचार', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली 2017।

पंडित दीन दयाल उपाध्याय की अन्य रचनाऐं

सम्राट चन्द्रगुप्त

जगद्गुरू शंकराचार्य

राष्ट्र जीवन की दिशा

विचार बिन्दु

भारतीय शिक्षा और संस्कृति पर अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें

मुले, पी0वी0– 'भारतीय शिक्षा के विकास की दिशा', यूनिवर्सिटी प्रैस, पुणे 2007।

दवे, सी0जी0– 'भारतीय शिक्षाः प्राचीन से आधुनिक तक' राजस्थान प्रकाशन, जयपुर 2015।

पांडेय, हरिशंकर– 'भारतीय संस्कृति और सभ्यता का दर्शन' प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।

शोध पत्र एवं जर्नल्स

शर्मा, राजेन्द्र प्रसाद– 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति और दीनदयाल उपाध्याय के विचार' भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, खंड 12, अंक4, 2021।

वर्मा, अनुज– 'भारतीय संस्कृति में शिक्षा का योगदान' शिक्षा और संस्कृति जर्नल, खंड 10, अंक 2, 2020।

''दीनदयाल उपाध्याय और स्वदेशी शिक्षा की अवधारणा'' (https://www.indiaeducation.net)

''नई शिक्षा नीति 2020: पंडित दीन दयाल उपाध्याय दृष्टिकोण का समावेश'' (https://www.educationtimes.com)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई दिल्ली, शिक्षा मंत्रालय (https://www.education.gov.in)

वेव सन्दर्भ

राष्टीय स्वयंसेवक संघ, पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन परिचय'' (https://www.rss.org)

भारत सरकार, नई शिक्षा नीति और भारतीय संस्कृति का समावेश'' (https://www.education.gov.in)

राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) (https://ncert.nic.in)

विश्वविद्यालय अनुसंधान आयोग (UGC) (https://www.ugc.ac.in)

अन्य संदर्भ

''भारतीय शिक्षा और संस्कृतिः दीनदयाल उपाध्याय के दृष्टिकोण'' हिन्दुस्तान टाइम्स विशेष रिपोर्ट, 2019।

दीनदयाल उपाध्यायः एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता'' इंडियन एक्सप्रैस, 2020।